राजस्थानी भाषा दक्षता

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम
(सर्टिफिकेट–कोर्स)

2025-2026

नई शिक्षा नीति–2020

राजस्थानी भाषा-साहित्य शोध केन्द्र

जैन विश्वभारती संस्थान

लाडनूँ–341306 (राजस्थान)

राजस्थानी भाषा दक्षता

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

(सर्टिफिकेट–कोर्स)

समय–अवधि : 6 माह

निर्धारित योग्यता : स्नातक

एक सत्र में कालाश : 90 घंटे

पूर्णांक : 200

पाठ्यक्रम –

अध्ययन क्षेत्र

1. **राजस्थानी भाषा साहित्य परंपरा**
2. **राजस्थानी लोक साहित्य परंपरा एवं संस्कृति**

उद्देश्य

राजस्थानी भाषा साहित्य और संस्कृति की परंपरा बहुत समृद्ध और विशिष्ट रही है लेकिन विशिष्ट अध्ययन के अभाव में अध्येता एवं विद्यार्थी इस भाषा एवं साहित्यिक परंपरा से अनभिज्ञ है। राजस्थानी के निवासी एवं प्रवासी राजस्थानी जनसमुदाय की अपनी भाषा साहित्य एवं संस्कृति के अध्ययन एवं उसके संबंध में लोकरूचि जागृत करने की दृष्टि से यह पाठ्यक्रम संशोधित किया गया है, जिसे इस विषय सामग्री में यचि रखने वाले जिज्ञासु आनलॉन अथवा ऑफलाइन के माध्यम से इस विषय का अध्ययन कर सके।

उपयोगिता

राजस्थानी भाषा साहित्य संस्कृति अध्ययन की प्रारंभिक जानकारी उपलब्ध करवायी जाएगी। यह पाठ्यक्रम राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर, कर्मचारी चयन आयोग, जयपुर परीक्षाओं तथा अन्य प्रतियोगी राजस्थानी भाषा, साहित्य, लोक साहित्य एवं संस्कृति संबंधी अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न–पत्र

राजस्थानी भाषा परंपरा

प्रथम इकाई – भाषा विकास की परंपरा–विभिन्न सिद्धान्त

द्वितीय इकाई – भाषा के विभिन्न स्वरूप उपबोली। बोली–विभाषा–मानक भाषा–भाषा

तृतीय इकाई – राजस्थानी भाषा की विकास परंपरा वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी

चतुर्थ इकाई – राजस्थानी बोलियों का परिचय–प्रमुख बोलियां–मारवाड़ी, मेवाडी, हाड़ोती, ढूंढाड़ी, बागडी, मेवाती, गोडवाड़ी अन्य भीली एवं पहाड़ी बोलियां

पंचम इकाई – राजस्थानी भाषा का स्वरूप–भाषायी तत्त्वों के आधार पर स्वरूप निर्धारण–स्वतंत्र एवं मानक भाषा

द्वितीय प्रश्न–पत्र

राजस्थानी साहित्य परंपरा

प्रथम इकाई – प्रारंभिक काल

1. अभिलेखीय काल
2. प्राचीन काल (वीरगाथा काल)

अभिलेखीय सामग्री : ईंट, प्रस्तर, मुहरें, शिलालेख, हस्तलिखित ग्रंथ–ताड़पत्र, ताम्रपत्र प्राचीन काल (वीरगाथा काल)–परिस्थितियां, प्रवृत्तियां, प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार

द्वितीय इकाई – पूर्वमध्यकाल–भक्तिकाल प्रमुख परिस्थितियां, प्रवृत्तियां

भक्तिकाव्य : **सगुण परंपरा**–रामाश्रयी, कृष्णाश्रयी, शाक्त परंपरा

निर्गुण परपंरा–राजस्थान के संत संप्रदाय और साहित्य, राजस्थान की जैन संत काव्य परंपरा

तृतीय इकाई – उत्तर मध्यकाल रीति, नीति एवं श्रृंगार काव्य परंपरा। प्रमुख परिस्थितियां प्रवृत्तियां प्रमुख रचनाएं एवं रचनाकार, प्रमुख गद्य विद्याऐ, ख्यात, हकीकत, विगत, विलास : वंशावली, पट्टावली, गुर्वावल्ली टीका, टब्बा, टिप्पण, बोलावबोध

चतुर्थ इकाई – आधुनिक राजस्थानी साहित्य

1. **आधुनिक गद्य परंपरा**–आधुनिक गद्य परंपरा–आधुनिक गद्य परम्परा के विविध आयाम प्रमुख गद्य विधाएं–रचनाए एवं रचनाकार

2. **आधुनिक पद्य परंपरा**–आधुनिक पद्य परम्परा के विभिन्न चरण–

   1. प्रथम चरण : सन् 1857 से 1920 तक
   2. द्वितीय चरण : सन् 1920 से 1947 तक
   3. तृतीय चरण : सन् 1947 से अद्यतन

काव्य परिस्थितियां, प्रवृत्तियां, विभिन्न काव्यधाराएं–रचनाएं और रचनाकार।

पंचम इकाई – राजस्थानी लोक साहित्य–परिचयात्मक अध्ययन।

1. लोक साहित्य : परिचय, परिभाषा, विशेषताएं
2. लोक साहित्य प्रमुख विधाएं–लोक कथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोकोक्ति साहित्य

अप्रस्ताविक ग्रंथ

1. राजस्थानी भाषा और साहित्य : डॉ. मोतीलाल मेनारिया
2. राजस्थानी भाषा और साहित्य का इतिहास : सीताराम लालस
3. राजस्थानी भाषा और साहित्य : संस्कृति : डॉ. कल्याण सिंह शेखावत
4. राजस्थानी भाषा और साहित्य का सैद्धान्ति विवेचन : डॉ. सोहनदान चारण